B.A. (Hons.) Arts Instrumental Music (Sitar)
Semester-II
Paper Code- BHI-122
Title of Paper- History & Theory
Unit-4

Elementary Knowledge of Gram and Moorchana

Created by
Dr. Geeta Singh

ग्राम (Gram)

ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्च्छनादेः समाश्रयः।

(संगीत रत्नाकर)

- सात स्वरों का समूह जो मूर्च्छना का आश्रय है अथवा जिसके आधार पर मूर्च्छनाएँ बनाई जाती हैं, उसे ग्राम कहा जाता है।
- निश्चित श्रुत्यांतरों पर स्थापित सात स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं।
- 'ग्राम' शब्द भारतीय संगीत की प्राचीन परम्परा से जुड़ा है।
- 'ग्राम' एक समूहवाची शब्द है।
- ग्राम तीन माने गए हैं- षड्ज ग्राम, मध्यम ग्राम एव गांधार ग्राम।
- षड्ज ग्राम में सात स्वरों की श्रुतियाँ हैं ➡

4	3	2	4	4	3	2
सा	रे	ग	म	प	ध	नी

- मध्यम ग्राम के सात स्वरों की श्रुतियाँ हैं

4	3	2	4	3	4	2
सा	रे	ग	म	प	ध	नी

- प्रत्येक स्वर अपनी अंतिम श्रुति पर स्थापित है।
- शास्त्रों में गांधार ग्राम का उचित वर्णन नहीं मिलता है।
- ऐसा कहा जाता है कि गांधार ग्राम का लोप हो गया है।
- निषाद से प्रारंभ होने के कारण गांधार ग्राम को निषाद ग्राम भी कहते हैं।

तालिका : षड्ज ग्राम

श्रुति संख्या	श्रुतियों के नाम	षड्ज ग्राम
1	तीव्रा	----------
2	कुमुद्वती	----------
3	मंदा	----------
4	छन्दोवती	षड्ज (सा)
5	दयावती	----------
6	रंजनी	----------
7	रक्तिका	ऋषभ (रे)
8	रौद्री	----------
9	क्रोधा	गांधार (ग)
10	वज्रिका	----------
11	प्रसारिणी	----------
12	प्रीति	----------
13	मार्जनी	मध्यम (म)
14	क्षिति	----------
15	रक्ता	----------
16	संदीपनी	----------
17	आलापिनी	पंचम (प)
18	मदंती	----------
19	रोहिणी	----------
20	रम्या	धैवत (ध)
21	उग्रा	----------
22	क्षोभिणी	निषाद (नी)

तालिका : मध्यम ग्राम

श्रुति संख्या	श्रुतियों के नाम	मध्यम ग्राम
1	तीव्रा	----------
2	कुमुद्वती	----------
3	मंदा	----------
4	छन्दोवती	षड्ज (सा)
5	दयावती	----------
6	रंजनी	----------
7	रक्तिका	ऋषभ (रे)
8	रौद्री	----------
9	क्रोधा	गांधार (ग)
10	वज्रिका	----------
11	प्रसारिणी	----------
12	प्रीति	----------
13	मार्जनी	मध्यम (म)
14	क्षिति	----------
15	रक्ता	----------
16	संदीपनी	पंचम (प)
17	आलापिनी	----------
18	मदंती	----------
19	रोहिणी	----------
20	रम्या	धैवत (ध)
21	उग्रा	----------
22	क्षोभिणी	निषाद (नी)

मूर्च्छना (Moorchana)

'क्रमयुक्ताः स्वराः सप्त मूर्च्छनास्त्वभिसंज्ञिताः।'

(नाट्यशास्त्र)

- ग्राम के सप्त स्वरों पर क्रमबद्ध आरोह-अवरोह करने को मूर्च्छना कहते हैं।
- प्रत्येक ग्राम से सात मूर्च्छनाओं की रचना होती है।
- संगीत में तीन ग्राम बताये गए हैं, अतः 7 x 3 कुल 21 मूर्च्छनाओं की रचना तीन ग्रामों से होगी।

षड्ज ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ

क्र.सं.	मूर्च्छना के नाम	आरोह	अवरोह
	श्रुत्यांतर →	4 3 2 4 4 3 2	2 3 4 4 2 3 4
1.	उत्तरमंद्रा	सा रे ग म प ध नी	नी ध प म ग रे सा
2.	रंजनी	2 4 3 2 4 4 3 नी़ सा रे ग म प ध	3 4 4 2 3 4 2 ध प म ग रे सा नी
3.	उत्तरायता	3 2 4 3 2 4 4 ध़ नी़ सा रे ग म प	4 4 2 3 4 2 3 प म ग रे सा नी़ ध़
4.	शुद्ध षड्जा	4 3 2 4 3 2 4 प़ ध़ नी़ सा रे ग म	4 2 3 4 2 3 4 म ग रे सा नी़ ध़ प़
5.	मत्सरीकृता	4 4 3 2 4 3 2 म़ प़ ध़ नी़ सा रे ग	2 3 4 2 3 4 4 ग रे सा नी़ ध़ प़ म़
6.	अश्वक्रान्ता	2 4 4 3 2 4 3 ग़ म़ प़ ध़ नी़ सा रे	3 4 2 3 4 4 2 रे सा नी़ ध़ प़ म़ ग़
7.	अभिरूद्गता	3 2 4 4 3 2 4 रे ग़ म़ प़ ध़ नी़ सा	4 2 3 4 4 2 3 सा नी़ ध़ प़ म़ ग़ रे

मध्यम ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ

क्र.सं.	मूर्च्छना के नाम	आरोह	अवरोह
1.	श्रुत्यांतर → सौवीरी	4 3 4 2 4 3 2 म प ध नी सां रें गं	2 3 4 2 4 3 4 गं रे सां नी ध प म
2.	हरिणाश्वा	2 4 3 4 2 4 3 ग म प ध नी सां रें	3 4 2 4 3 4 2 रें सां नी ध प म ग
3.	कलोपनता	3 2 4 3 4 2 4 रे ग म प ध नी सां	4 2 4 3 4 2 3 सां नी ध प म ग रे
4.	शुद्धमध्यमा	4 3 2 4 3 4 2 सा रे ग म प ध नी	2 4 3 4 2 3 4 नी ध प म ग रे सा
5.	मार्गी	2 4 3 2 4 3 4 नी़ सा रे ग म प ध	4 3 4 2 3 4 2 ध प म ग रे सा नी़
6.	पौरवी	4 2 4 3 2 4 3 ध़ नी़ सा रे ग म प	3 4 2 3 4 2 4 प म ग रे सा नी़ ध़
7.	हृष्यका	3 4 2 4 3 2 4 प़ ध़ नी़ सा रे ग म	4 2 3 4 2 4 3 म ग रे सा नी़ ध़ प़

ग्राम मूर्च्छना

- **षड्ज ग्राम** → सात मूर्च्छनाएँ
- **मध्यम ग्राम** → सात मूर्च्छनाएँ
- **गांधार ग्राम** → सात मूर्च्छनाएँ

21 मूर्च्छनाएँ

निष्कर्ष:

- षड्ज ग्राम और मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाओं की तालिका में प्रत्येक प्रथम स्वर को 'सा' मानकर क्रमबद्ध आरोह-अवरोह करते हैं। यही मूर्च्छना है।

- उदाहरण के लिए, षड्ज ग्राम की सातों मूर्च्छनाओं के प्रथम स्वर को जो क्रमशः 'सा नी़ ध़ प़ म़ ग़ रे' हैं, उन्हें 'सा' मानकर उसके आगे आने वाले अन्य स्वरों को 'रे ग म प ध नी' समझना चाहिए।

- इस प्रकार प्रत्येक मूर्च्छना में प्रत्येक स्वर की श्रुतियाँ परिवर्तित होती जाएँगी। सभी मूर्च्छनाओं का श्रुत्यांतर भिन्न होगा।

Thank You